अमृत प्रार्थना
शिव जी से

आज की जो प्रार्थना है वह भगवान शिव से की जाएगी।
भगवान से प्रार्थना करेंगे कि हे प्रभु! हे शिव शंकर! हे भोलेनाथ! आप जगत के कल्याण करने वाले भक्तों के रक्षक हैं। जब-जब भी इस विश्व पर आपदा-विपदा आती है तब तब भक्त आप की शरण में आते हैं। आप देवों के देव महादेव कहलाते हैं क्योंकि देवताओं पर जब संकट आता है तो भी वे आपकी शरण में आते हैं। जब समुद्र का मंथन देव और असुरों ने मिलकर किया तो उस समय कालकूट नामक विष प्रकट हुआ जो पूरे विश्व को जलाने लगा। तब सारे प्राणी ,सारे देवी देवता आप की शरण में आए और आपने उस विष का पान कर लिया। और अपने कंठ में उसे धारण किया जिस कारण से आप का कंठ नीला पड़ गया। अतः आप नीलकंठ महादेव कहलाए।
उसी प्रकार से हे प्रभु! हम आपकी शरण में आए हैं। हमारे जीवन में विषयता है, प्रतिकूलता है, दुःख है, कष्ट है, समस्याएँ हैं। मन में विषाक्त वातावरण है और इस विष का पान हम नहीं कर पा रहे हैं। जिस प्रकार कालकूट ने उस काल को, पूरे विश्व को जलाना प्रारंभ किया तथा वैसे ही विष ने,इस प्रतिकूलता, इस समस्या, इस दुःख-कष्ट आदि ने, जिसने हमारे जीवन को जलाना प्रारंभ कर दिया है तथा हमें हम आपकी शरण में आए हैं। आप अपनी शरण में आए भक्तों के विष को पी लेते हैं। तथा हे प्रभु! इन सारी की सारी समस्याओं को, कष्टों को,आपके चरणों में समर्पित करते हैं। आप भोलेनाथ कहलाते हैं। बहुत थोड़े में ही प्रसन्न हो जाते हैं। अतः जल,पत्र, पुष्प, दूध आदि चढ़ा देने मात्र से ही प्रसन्न हो जाते।
कामदेव ने आप पर चढ़ाई की। आपकी साधना,आप की समाधि,आपकी तपस्या को नष्ट करना चाहा भंग करना चाहा। लेकिन आपने अपने तीसरे नेत्र से उसे जलाकर भस्म कर दिया। देवताओं के कल्याण के लिए पुनः वरदान भी दे दिया।
वैसे ही हम सबके मन में भी काम,क्रोध,लोभ,मोह समय समय से आकर के हमें अपने धर्म से विचलित कर देते हैं। अपने कर्तव्य कर्म से विचलित कर देते हैं। हम इनके वश में हो जाते हैं। यह हमारे वश में नहीं रहते।
अतः हे प्रभु हम आप की शरण में आए हैं। जिस प्रकार से लोभी पुरुष के ह्रदय में लोभ, कामी पुरुष के ह्रदय में कामिनी बसती है, एक विषयी पुरुष के ह्रदय में विषय ही बसता है ,वैसे ही हमारा इष्ट हमारे ह्रदय में वास करें।
यही आपसे प्रार्थना है अपने चरणों की अनन्य भक्ति हमें प्रदान करें!
ॐ शांति! शांति! शांतिः!